समाचार वाणी
ख़बर जो करें असर !

नाशिक | Wednesday, 26 August 2026

सीएम यादव का बयान : “अगर राम मुस्कुराए अयोध्या मे, तो कृष्ण क्यों नहीं ?”

Sanket Morankar Published on 22 Sep 2025

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री **सीएम यादव** ने हाल ही में एक विवादित बयान दिया है, जिसमें उन्होंने कहा:

> “अगर राम मुस्कुराए अयोध्या में, तो कृष्ण क्यों नहीं मुस्कुराए ?”

यह बयान उत्तर प्रदेश की राजनीति और धार्मिक भावनाओं के बीच संतुलन बनाए रखने के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

सीएम यादव ने यह टिप्पणी एक धार्मिक कार्यक्रम और मीडिया से बातचीत के दौरान की।

- उन्होंने कहा कि भारत की संस्कृति और धर्म में सभी देवताओं और धार्मिक प्रतीकों का सम्मान समान रूप से होना चाहिए।
- उनका उद्देश्य यह दिखाना था कि धार्मिक उत्सव और समारोह केवल किसी एक देवता या समुदाय तक सीमित नहीं होना चाहिए।

विशेषज्ञों का कहना है कि यह बयान **समानता और धार्मिक समरसता** की दिशा में है।

अयोध्या में राम मंदिर निर्माण के बाद, मंदिर परिसर और आसपास के क्षेत्र में **धार्मिक उत्सव और शोभा यात्राएँ** आयोजित की जा रही हैं।

- राम की प्रतिमा और मंदिर के दर्शन करने वाले भक्तों में उत्साह और खुशी का माहौल देखा जा रहा है।
- सीएम यादव ने यह पूछकर कि यदि राम की मुस्कान स्वागत योग्य है, तो कृष्ण के उत्सव और स्मरण को भी समान रूप से सम्मान क्यों न दिया जाए, **सभी को सोचने पर मजबूर किया**।

भगवान कृष्ण के जन्मदिन और पूजा भारत भर में बड़े उत्साह से मनाई जाती है।

- जन्माष्टमी और द्वारका यात्रा जैसे कार्यक्रमों में करोड़ों भक्त भाग लेते हैं।
- सीएम यादव का बयान इस बात पर जोर देता है कि **धार्मिक प्रतीकों के प्रति समान दृष्टिकोण** होना चाहिए।

इस संदर्भ में उनकी टिप्पणी ने राजनीति और धर्म दोनों में चर्चा का विषय बना दिया।

सीएम यादव के बयान पर राजनीतिक दलों और सामाजिक संगठनों ने मिश्रित प्रतिक्रिया दी है।

- कुछ नेता इसे **धार्मिक समरसता और समान दृष्टिकोण** का उदाहरण मान रहे हैं।
- वहीं, अन्य विपक्षी नेताओं ने इसे विवादास्पद और चुनावी लाभ के लिए दिया गया बयान बताया।
- सोशल मीडिया पर भी फैंस और नागरिक अपने-अपने विचार साझा कर रहे हैं।

एक यूजर ने ट्वीट किया—
"धार्मिक भावनाओं मे संमानता जरूरी है, यादव का बयान इस दिशा मे सोचने पर मजबूर करता है।"

विशेषज्ञ मानते हैं कि सीएम यादव का बयान केवल धार्मिक चर्चा तक सीमित नहीं है।

- उनका उद्देश्य **सांप्रदायिक संतुलन** और उत्तर प्रदेश की बहुल धार्मिक पहचान को बनाए रखना है।
- उन्होंने यह भी कहा कि सभी धार्मिक उत्सवों और प्रतीकों का सम्मान समान रूप से होना चाहिए।

यह दृष्टिकोण राज्य में **सामाजिक सौहार्द और सांप्रदायिक शांति** बनाए रखने में मददगार हो सकता है।

मीडिया विश्लेषक मानते हैं कि यह बयान **राजनीतिक संदेश और सांस्कृतिक संदेश का मिश्रण** है।

- राजनीतिक दृष्टि से यह **वोट बैकं और सामाजिक संतुलन** पर असर डाल सकता है।
- सांस्कृतिक दृष्टि से यह जनता में **धार्मिक समानता और भाईचारा** की भावना को मजबूत कर सकता है।

विश्लेषक का कहना है कि इस बयान ने यूपी की राजनीति और धार्मिक पहचान दोनों में **नई बहस और चर्चाएं** शुरू कर दी हैं।

सीएम यादव का बयान "अगर राम मुस्कुराए अयोध्या में, तो कृष्ण क्यों नहीं?" **धार्मिक समानता और सांस्कृतिक संतुलन** पर जोर देता है।

- उन्होंने यह दिखाया कि भारत में सभी धार्मिक प्रतीकों और देवताओं का सम्मान समान रूप से होना चाहिए।
- बयान ने राजनीति और समाज दोनों में नई बहस को जन्म दिया है।
- उत्तर प्रदेश में धार्मिक और सांस्कृतिक संतुलन बनाए रखना अब और महत्वपूर्ण हो गया है।

यह स्पष्ट है कि यादव का बयान केवल शब्द नहीं, बल्कि **राजनीतिक और सांस्कृतिक संदेश** भी है, जो आने वाले दिनों में राज्य में और चर्चा का विषय बनेगा।

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Sanket Morankar, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsover.